COLLABORATIVE JOURNAL OF MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH (CJMDR)
A Peer Reviewed Multi-Disciplinary E-Journal
Jan-June- 2026, Vol. 1
https://cjmdr.com

पुरातन मार्ग ताल

डॉ० आवेश कुमार
पी०एच०डी०, जे०आर०एफ०
बनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

सारांश :—

भारतीय संगीत के प्रमुख तत्वों में ताल का महत्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि लयात्मकता तो स्वतंत्र रूप से सभी में विद्यमान है, किन्तु उस लय के प्रमाण को निर्धारित करने में ताल प्रयोजनीय है। ताल के सुसंगत प्रयोग से संगीत में आनन्दवर्धक तत्व, द्विगुणित हो जाते हैं। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र ग्रन्थ के ३१वें अध्याय में पंच मार्गी तालों का विस्तृत विवेचन किया है।

भरत मुनि ने पंचमार्गी ताल कहे हैं, जिनकी संख्या व स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। ये ताल हैं— चच्चत्पुट, चाचपुट, षट्पितापुत्रक, सम्पक्वेष्टाक और उद्घट्ट मार्ग संगीत का प्रमुख प्रयोजन आत्मरंजन, ईश्वर आराधना, अदृष्ट फल की प्राप्ति है। मार्गताल भी मार्ग संगीत का ही एक अंग है। भरतकालीन संगीत में प्रमुख रूप से मार्ग तालों का ही प्रयोग होता था। जैसे गीतक आदि के साथ मार्ग तालें प्रयुक्त होती थीं।

की—वर्ड :— मार्ग, संगीत, मार्गताल, गुरु, लघु, यथाक्षर

पंचमार्ग ताल —

भरत मुनि द्वारा प्रतिपादित पांच मार्ग तालों का विवरण निम्नवत् है— वस्तुत: इन तालों का जब से जन्म हुआ तब से अब तक इन तालों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ ये यथावत् वैसी ही है जैसी अपने आरम्भिक दौर में थी।

चच्चत्पुट :—

प्रथमं गुरूणी कृत्वा लघु चान्त्यं प्लुतन्तथा

अक्षराणां निवेशेन स तु चच्चत्पुटस्तदा।[१]

यदि आरम्भ में दो वर्ण गुरु, एक लघु और अन्तिम वर्ण प्लुत हो तो चच्चत्पुट बन जाता है। चच्चत्पुट ताल स्वरूप इस प्रकार है—

तालरूप (यथाक्षर)	**च**	**च्च**	**त्पु**	**ट:**
अंग	ऽ	ऽ	।	। ऽ
मात्राएं	२	२	१	३
ताल क्रिया	सन्निपात	शम्या	ताल	शम्यां
कुल मात्रा	**८ मात्रा**			

इस ताल के अन्य नाम भी हैं— चच्चत्पुट, चच्चपुट एवं चतुस्त्र ताल। शास्त्रों में इसके तीन भेद वर्णित हैं— एकल, द्विकल, चतुष्कल। यथाक्षर में ताल के नाम के अनुसार ही क्रमशः वर्ण योजना की जाती है। चच्चत्पुट शब्द में अक्षर क्रमशः गुरु, गुरु, लघु, प्लुत है। इस प्रकार यथाक्षर चच्चत्पुट का रूप ऽ ऽ । ऽ है।

चाचपुटम् —

गुरूर्लघूऽचैव भवेच्चाचपुटाभिधे[५]

चाचपुट ताल में क्रमशः, एक गुरु, दो लघु व एक गुरु होता है। प्राचीन मार्ग तालों में दूसरा स्थान चाचपुट ताल का है इसे चाचपुट तथा तयस्त्रताल भी कहा जाता है। इसमें द्विकल और चतुष्कल होते हैं। इसकी ताल क्रिया—

तालरूप (यथाक्षर)	**चा**	**च**	**पु**	**ट**
अंग	ऽ	।	।	ऽ
मात्राएं	२	१	१	३
ताल क्रिया	शम्या	ताल	शम्या	ताल
कुल मात्रा	**६ मात्रा**			

षट्पिता पुत्रक :—

षटपितापुत्रक पंच मार्ग तालों में तीसरा स्थान है, इस ताल का इसके अन्य नाम पंचपाणि तथा उत्तर भी है।[२] इसके यथाक्षर द्विकल व चतुष्कल भेद होते हैं। षट्पितपुत्रक ताल में क्रमशः एक प्लुत, दो गुरु व एक प्लुत होता है;

तालक्रिया —

तालरूप (यथाक्षर)	**षट्**	**पि**	**ता**	**पु**	**त्र**	**क**
अंग	। ऽ	।	ऽ	ऽ	।	। ऽ
मात्राएं	३	१	२	२	१	३
ताल क्रिया	सन्निपात	ताल	शम्या	ताल	शम्या	ताल
कुल मात्रा	**१२ मात्रा**					

सम्पक्वेष्टाक :—

पंच मार्ग तालों में चाथा स्थान सम्पक्वेष्टाक ताल का है। यह भी त्रयस्त्र या चाचपुट ताल का ही एक भेद है। इसके भी द्विकल आदि तीन रूप बनते हैं।[६] सम्पक्वेष्टाक ताल में क्रमशः एक प्लुत, तीन गुरु व एक प्लुत होता है।

ताल क्रिया —

तालरूप (यथाक्षर)	**सं**	**प**	**क्वे**	**ष्ट**	**क**
अंग	।ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	।ऽ
मात्राएं	३	२	२	२	३
ताल क्रिया	ताल	शाम्या	ताल	शम्या	ताल
कुल मात्रा	**१२ मात्रा**				

उद्घट्ट :—

प्राचीन मार्ग तालों में अन्तिम (पांचवीं) ताल उदघट्ट है। यह भी त्रयस्त्र ताल का ही एक भेद है।[३] उदघट्ट ताल में एक मगण अर्थात् तीन गुरु होते हैं।

ताल क्रिया —

तालरूप (यथाक्षर)	**उद्**	**घट्**	**ट**
अंग	ऽ	ऽ	ऽ
मात्राएं	२२	२	२
ताल क्रिया	निष्काम	शम्या	शम्या
कुल मात्रा	**६ मात्रा**		

मार्ग तालों के यथाक्षर रूप :—

प्रत्येक मार्ग ताल के प्रमुख तीन रूप होते हैं— यथाक्षर, द्विकल और चतुष्कल। भरत मुनि के अनुरूप यथाक्षर ताल में 'ध्रुव' गुरु अक्षरों वाला होता है।[४] यथाक्षर ताल में ताल का अक्षरों के अनुसार रहने वाला सामान्यतः स्वरूप होता है अर्थात् जब ताल के नाम में प्रयुक्त अक्षरों की सामान्य स्थिति के अनुसार 'पात' हो तो उसे यथाक्षर कहते हैं। जब यह दो गुरु अक्षरों से युक्त होता है तो द्विकल

यानी यथाक्षर का दुगुना तथा द्विकल से दुगुना होने पर चतुष्कल कहलाता है। यथाक्षर को एककल भी कहा जाता है। इन्हीं एककल, द्विकल आदि से मार्ग तालों का विस्तार किया जाता है।

मार्ग ताल में गुरु ऽ का महत्व :—

मार्ग तालों के स्वरूप में लघु, गुरु और प्लुत का प्रयोग किया गया है। मार्ग तालों में मौलिक इकाई गुरु ही है क्योंकि लय स्थापित करने का आधार वहीं है और तालों के द्विकल—चतुष्कल रूप भी गुरु के आधार पर ही बनते हैं। संगीतरत्नाकर में कला को गुरु का पर्याय भी कहा गया है— 'गुरु: कलात्र' चच्चत्पुट के एककल आदि तीनों रूपों में क्रम से ४, ८ और १६ गुरु कहे गये हैं। यद्यपि इसका सीधा अर्थ तो यही है कि ८, २६ और ३२ मात्रा (लघु) होती है, लेकिन गुरु का महत्व दिखाने के लिए मात्रा के बजाय गुरु कहा गया है।[४] गुरु के इस महत्व, अनिवार्यता और मूल होने के कारण ही भरतमुनि ने इसे ताल की 'प्रकृति' कहा है। पात और अक्षरों की संख्या समान होते हुए भी चतुरस्र और त्रयस्र के अन्तर को स्थापित करने के कारण ही गुरु प्रकृति है।

प्राचीन काल में प्रचलित गीत विधा जातक, जिसका मुख्य प्रयोजन ईशस्तुति है। इसमें मार्गतालों की अत्यन्त प्रधानता थी।[५] वस्तुत: गीतकों का सम्पूर्ण आकार मुख्य रूप से तालाधारित ही था। यद्यपि सभी गीतकों में ताल की मुख्यता होती है। मद्रकादि गीतकों का प्रयोग पूर्वरंग में होता था तथापि पूर्वरंग विधान, गीतक आदि गान्धर्व का अंग हैं, अत: उसका सहगामी मार्गताल भी गान्धर्व का ही भाग है, जिसका मुख्य प्रयोजन अभ्युदय की प्राप्ति है। गीतकों में तालाधारित स्वरूप को लेकर किसी प्रकार का परिवर्तन अभिप्रेत नहीं है। गीतकों के पदों में शिवस्तुति पदक अथवा निरर्थक गीतों का विनियोग बताया गया है, किन्तु ताल सदैव अपरिवर्तनीय है। कालान्तर में प्रचलित जातिगान में भी मार्ग तालों का ही प्रयोग विहित है। जातिगान भी मार्ग संगीत का एक प्रमुख अवयव है। अर्थात् यह है कि मार्ग संगीत की जितनी प्राचीन विधाएं हैं, उन सभी में मार्ग तालों का विधिवत् प्रयोग किया गया है।

अभिनवगुप्त ने अभिनवभारती में यह वर्णित किया है कि नियत काल में कला और पातों के समूह (नियतक्रम) को मार्ग कहते हैं।[९] भरतमुनि ने तीन मार्गों का उल्लेख किया है चित्र, वार्तिक और दक्षिण।[११] पं० शारंगदेव ने चार मार्ग बताए हैं— ध्रुव, चित्र, वार्तिक और दक्षिण।[१२]

प्राचीन संगीत में पांच निमेषों अथवा पांच ह्रस्व अक्षरों का उच्चारण काल 'लघु' अथवा 'मात्रा' कहलाता है। यही लघु या मात्रा ताल की इकाई था। दो लघु के मिलने से एक गुरु होता था। मार्ग तालों में साधारणतया लघु, गुरु, प्लुत मात्राओं के एवं देशी तालों में द्रुत मात्रा के प्रयोग होते थे।

भरतमुनिकृत नाट्यशास्त्र में वर्णित है कि ताल की प्रत्येक मात्रा के लिये सशब्द या नि:शब्द में से कोई क्रिया अवश्य की जाती थी। ध्रुवा, शम्या, ताल और सन्निपात सशब्द क्रियायें थीं ध्रुवा में चुटकी बजायी जाती थीं।[१२] शम्या में दाहिने हाथ से बांये हाथ पर आघात, ताल में बांये हाथ से दाहिने पर आघात और सन्निपात में दोनों हाथ से ताली बजायी जाती थी। नि:शब्द क्रिया में आवाप, निष्क्राम, विक्षेप, प्रवेश की क्रियायें थी। आवाप में अंगुलियों को बन्द किया जाता था, निष्क्राम में अंगुलियाँ खोली जाती थीं[१३], विक्षेप में अंगुलियों को दाहिनी ओर फेंका जाता था और प्रवेश में हाथ को नीचे की ओर ले जाया जाता था। मार्ग तालों में मौलिक इकाई गुरु है क्योंकि लय स्थापित करने का मौलिक आधार वही है और तालों के द्विकल—चतुष्कल रूप भी गुरु के आधार पर ही बनते हैं।

मार्ग तालों की जाति :—

भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र ग्रन्थ में मार्गी तालों की मुख्य दो जातियाँ बतायी हैं। एक चतस्र, दूसरी त्रयस्त्र।[१४] दोनों जातियों के दो ताल बताये हैं जो क्रमश: चच्चत्पुटा: तथा चाचपुट: है। तीसरी जाति मिश्र बतायी है परन्तु यह भी वर्णित है कि इसे शम्या, ताल तथा प्रवेश होने पर अन्य प्रकार का त्रयस्र भी कह सकते हैं। यह ताल है षट्पितापुत्रक जिसे पंचपाणि भी कहा है। इसके छ: घात प्रकार क्रमश: सन्निपात, ताल, शम्या, ताल, शम्या, ताल है। तालादि के त्रयस्र भेद में एक और प्रकार बताया है उसका नाम सम्पक्वेष्टाक बताया है। जब त्रयस्र में सभी गुरु होंगे तो उसे उद्घट्ट कहेंगे। त्रयस्र चाचपुट का ही एक भेद (प्रकार) उद्घट्ट है तथा षट्पितापुत्रक का ही एक भेद सम्पक्वेष्टाक है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि जो पंच मार्ग ताले अपने आरम्भिक समय से लेकर अधुनाकाल तक उनका स्वरूप, आकार, सिद्धान्त वही हैं जैसे पहले थे। उनमें कोई उपजता या रचनात्मकता या नवीन तथ्य नहीं जोड़े जा सकते वही पुरातन स्वरूप पीढ़ी दर पीढ़ी अग्रेसित हो रहा है बिना किसी परिवर्तनशीलता के।

संदर्भ सूची

1. शास्त्री बाबूलाल शुक्ल. (२०२१). भरतमुनिप्रणीत नाट्यशास्त्र हिन्दी प्रदीप. वाराणसी : चौखम्भा संस्कृत संस्थान, पृ० ११२
2. जौहरी सीमा. (२०१९). ताल एक ऐतिहासिक यात्रा. नई दिल्ली : कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, पृ० ७
3. चौधरी सुभद्रा. (२००४). भारतीय संगीत में निबद्ध. नई दिल्ली : राधा पब्लिकेशन, पृ० ४२
4. जौहरी रेनू. (२०१९). ग्रंथ सारामृत. नई दिल्ली : कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, पृ० ३५
5. वही, पृ० ३५
6. शास्त्री बाबूलाल शुक्ल. (२०२१). भरतमुनि प्रणीत नाट्यशास्त्र हिन्दी प्रदीप. वाराणसी : चौखम्भा संस्कृत संस्थान, पृ० १२०
7. चौधरी सुभद्रा. (२००४). भारतीय संगीत में निबद्ध. नई दिल्ली : राधा पब्लिकेशन, पृ० ३८
8. वही, पृ० १६२—१६३
9. वही, पृ० १९
10. मराठे भालचन्द्रराव. (तृतीय संस्करण). ताल वाद्य शास्त्र. ग्वालियर : शर्मा पुस्तक सदन, पृ० २४९
11. वही, पृ० २४९
12. मिश्र पंडित छोटेलाल. (२०२३). ताल प्रबन्ध. नई दिल्ली : कनिष्क पब्लिशर्स, पृ० ९९
13. वही, पृ० ९९
14. शास्त्री बाबूलाल शुक्ल. (२०२१). भरतमुनि प्रणीत नाट्यशास्त्र हिन्दी प्रदीप. वाराणसी : चौखम्भा संस्कृत संस्थान, पृ० १११